क्या करें... कैसे करें... क्यों करें

अप्रैल 2015

- मृदा संरचना में सुधार हेतु अकरस जुताई का कार्य करें।
- टमाटर तथा मिर्च में फलछेदक का प्रकोप होने पर क्विनालफास 25 ई.सी. का 800 मि.ली प्रति हेक्टे. की दर से छिड़काव करें।
- टमाटर, मिर्च, बैंगन, भिंडी तथा बरबट्टी आदि सब्जियों के बीज तैयार करने का उचित समय है।
- आम, नींबू वर्गीय एवं अन्य फसलों का सिंचाई प्रबंधन करें।
- चारे की फसल (मक्का, ज्वार, नेपियर) की बुआई करें।
- आलू, प्याज, लहसुन आदि सब्जियों की खुदाई एवं भंडारण करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों में लाल भृंग, फल मक्खी कीटों के नियंत्रण हेतु बीज बुआई के पहले कार्बोडिल 10 प्रतिशत डी.पी.गड्ढों में मिलाना चाहिये।

मई 2015

- भूमिजनित रोगों के नियंत्रण हेतु खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें।
- नर्सरी की जमीन की जुताई कर एक बार पानी दें तथा पालीथीन की 200 गेज मोटी, रंगहीन परत से 20-24 दिन के लिये ढंक दें।
- नींबू वर्गीय पौधों की सुखी तथा केंकर से ग्रसित शाखाओं को काटकर जला दें तथा कटे हुये स्थान पर किसी फफूंदनाशक दवा का पेस्ट लगायें।
- मृदा संरचना सुधार हेतु अकरस जुताई करें एवं कार्बनिक खाद (एफ, वाय, एम/घुराव खाद) खेतों में वितरित करें।
- हल्दी, धुइयाँ, अदरक हेतु खेत की तैयारी करें एवं बुवाई करें।
- आम, बेल, अनानास, बेर का मुरब्बा, चटनी, आचार एवं सब्जियों को सुखाने का कार्य करें।
- नये फल बाग लगाने के लिये गड्ढों की खुदाई करें एवं बगीचों का रेखांकन करें।
- पानी की सुविधा उपलब्ध हो तो हरी खाद हेतु सान व ढैंचा को लगावें।
- फसलों में दीमक तथा भूमिगत कीटों के नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण को 20-25 किलो प्रति हेक्टे. की दर से मिट्टी में मिलायें तुा गहाई करें।

जून 2015

- बुवाई पूर्व जुताई कार्य करें ताकि वितरित किये गये कार्बोनिक खाद का मृदा में उचित मिश्रण हो सकें।
- बरसात की फसल हेतु कद्दूवर्गीय सब्जियों के बीजों की बुवाई करें।
- सोयाबीन एवं अरहर के लिये जमीन की तैयारी कर बुवाई करें।
- दलहनी फसलों को बुवाई के पूर्व फंफूदनाशक दवा एवं राइजोबियम कल्चर से अवश्य उपचारित करें।
- धान के बीजों को 17 प्रतिशत नमक के घोल में डालकर ठोस बीजों का चुनाव करें तथा चयनित बीजों को 2 बार स्वच्छ पानी से धोकर साफ सुफर / कार्बेडाजिम (2 ग्रा/ली) से उपचारित कर बोयें।
- मछली पालन हेतु तालाबों को पानी से भर लें तथा 250 कि.ग्रा./हे. कि दर से चूने का छिड़काव करें।
- भूमि जनित रोगों के नियंत्रण हेतु खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें।
- मशरूम के उत्पादन गृह कि मरम्मत करें। पुरानी टूटी हुई चटाइयों के स्थान पर नई चटाइयाँ लगायें। छत के धान पुआल को बदल दें। रेक तथा बांस बल्लियों पर दीमक नाशक दवा से उपचारित करें।

केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिक

- डॉ.एस.के.वर्मा, कार्यक्रम समन्वयक, मो. : 9424214626
- डॉ.रेखा सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान), मो. : 9425517103
- डॉ.सौगत सासमल, विषय वस्तु विशेषज्ञ (मत्स्य विज्ञान), मो. :9406027360
- श्री साकेत दुबे, विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी), मो. : 8817551202
- डॉ.मनीष कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), मो. : 9754377591
- इंजी.स्वीश केशरी, (मृदा एवं जल अभियांत्रिकी), मो. : 9425373479
- श्री एस.एम.अली हुमायूँ, कार्यक्रम सहायक (कीट विज्ञान) मो. : 9827909069

प्रेषक :
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्राम - भलेसर,
महासमुंद (छ.ग.) पिन : 493 445
संपर्क सूत्र : फोन - 07723 204852
Email : kvkgmahasamund@gmail.com

सेवा में, बुक पोस्ट
श्री/श्रीमति/डॉ. .....
.....
.....

खत खूंपि स्वच्छ मिशान

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद (छ.ग.)

वर्ष - 7 अंक - 12 त्रैमासिक पत्रिका अप्रैल - जून 2015

संपादक मण्डल

संरक्षक
डॉ. एस. के. पाटिल
कुलपति
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवायें
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्रोत
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना संचालक,
भा.कृ.अ.प., अंचल-7
जबलपुर (म.प्र.)

प्रधान संपादक
डॉ. एस.के.वर्मा
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद

संपादक
डॉ. रेखा सिंह
विषय वस्तु विशेषज्ञ
के.वि.के. महासमुंद

सह-संपादक
श्री एस.एम.अली हुमायूँ
कार्यक्रम सहायक

कृषक संगोष्ठी एवं लोक सुराज अभियान का शुभारंभ

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद में कृषक संगोष्ठी एवं लोक सुराज अभियान का शुभारंभ दिनांक 15 अप्रैल 2015 को हुआ। इस कार्यक्रम में जिले के विधायक माननीय डॉ. विमल चोपड़ा, महासमुंद, माननीय श्री चुन्नीलाल साहू, खल्लारी, माननीय श्रीमती रूपकुमारी चौहान, बसना, माननीय श्री रामलाल चौहान, सरायपाली, माननीय कुलपति डॉ.एस.के.पाटील, इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, श्री पी.आर.कृदत्त, संचालक कृषि, छत्तीसगढ़ शासन, श्रीमती अनीता दुर्गाचरण पटेल, अध्यक्ष जिला पंचायत महासमुंद, श्री धरमदास महिलांग, अध्यक्ष जनपद पंचायत, महासमुंद, श्री पुनम चंद्राकर, भू.पू.राज्य मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन, श्री उमेश कुमार अग्रवाल, कलेक्टर महासमुंद, श्रीमती एस.समाजदार, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत महासमुंद, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर से डॉ.जे.एस.उरकुरकर, निदेशक अनुसंधान सेवाएं, डॉ.के.एल.नंदेहा, निदेशक विस्तार सेवाएं (प्रभारी), श्री के.सी.पैकरा, कुलसचिव, इंजी.जी.एल.ठाकुर, अधीक्षक भौतिक संयंत्र एवं महासमुंद जिले के सभी विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित हुये।

इस अवसर पर किसानों को कृषि एवं उससे जुड़े विभागों की विभिन्न योजनाओं की जानकारी के लिये प्रदर्शनी लगाई गयी। कार्यक्रम के अंत में कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग, पशुपालन विभाग एवं मछली पालन विभाग द्वारा हितग्राहियों को अनुदान राशि का चेक एवं मिनिकिट आदि का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में जिले के 1000 से अधिक कृषक उपस्थित हुये।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सांसद आदर्श ग्राम कोमाखान, विकासखंड बागबाहरा, जिला महासुमंद (छ.ग.) में किसान मेला एवं संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद द्वारा सांसद आदर्श ग्राम में विकासखंड बागबाहरा जिला कोमाखान संगोष्ठी किसान मेला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय श्री चंदूलाल साहू, सांसद महासमुंद, अध्यक्षता माननीय श्री चुन्नीलाल साहू, विधायक खल्लारी तथा माननीया श्रीमती अनीता पटेल, अध्यक्ष जिला पंचायत, महासमुंद की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत गायन के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य अतियियों का स्वागत पुष्पगुच्छ के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि माननीया श्रीमती शशि तेजन चंद्राकर, अध्यक्ष जनपद पंचायत, बागबाहरा, श्रीमती एस.समाजदार, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत महासमुंद, श्री गयाराम, उप संचालक कृषि, डॉ.झरिया, उप संचालक, पशु पालन तथा उद्यानिकी, मछली पालन एवं अन्य विभागों के अधिकारी गण उपस्थित थे तथा कोमाखान ग्राम पंचायत की सरपंच कुमारी कुंती तांडी, उप सरपंच श्री गोरख यादव, पंच, सचिव एवं अन्य पदाधिकारी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

मशरूम उत्पादन तकनीका पर प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, भलेसर,महासुमंद में मुख्यमंत्री कौशल विकास योजनांतर्गत, आत्मा, कृषि विभाग, महासमुंद द्वारा प्रायोजित मशरूम उत्पादन तकनीकी विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ माह फरवरी 2015 से हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महासमुंद जिले के विभिन्न ग्रामों के 28 कृषक (पुरूष व महिलायें) सम्मिलित हुये। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कक्ष में दृश्य एवं श्रव्य तकनीकी द्वारा प्रशिक्षण दिया गया एवं उसके पश्चात सभी जानकारी का चरणबद्ध तरीके से व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रयोगशाला एवं प्रक्षेत्र में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के तकनीकी सत्र में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के अलावा इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन तकनीकी विषय के विशेषज्ञ मशरूम उत्पादन तकनीकी की सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद में पाँच दिवसीय मत्स्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित मछली उत्पादन बढ़ाने हेतु सामुदायिक तालाब का प्रबंधन विषय पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस का शुभारंभ महासमुंद जिले की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती एस.समाजदार द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र महासमुंद में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महासमुंद जिले के 20 प्रगतिशील मत्स्य पालन करने वाले कृषकों ने भाग लिया। पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें मछली पालन विभाग, छ.ग.शासन और इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के मत्स्य वैज्ञानिकों द्वारा सामुदायिक तालाबों में मत्स्य पालन के विषय में विस्तृत जानकारी के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया।

केन्द्र की उपलब्धियां

कृषकों के खेतों में वैज्ञानिक परीक्षण (आनफार्म टेस्टिंग)

क्र.	फसल	शीर्षक	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	कृषक संख्या	रकबा (एकड़)
1.	हल्दी	हल्दी की रोमा किस्म का आंकलन		4	2
2.	धान	धान की उन्नत किस्म दुर्गेश्वरी (IGKV R-2) में तुलनात्मक उपज परीक्षण मूल्यांकन	उपज परीक्षण	4	4
3.	मूंग	मूंग में रासायनिक खरपतवार नियंत्रण का मूल्यांकन	पेंडामेथिलीन द्वारा खरपतवार	4	4
4.	धान	एस.आर.आई. में खरपतवार नियंत्रण के लिये अंकिका पैडी वीडर का आंकलन	छोटे कृषि उपकरण	4	4
5.	धान	आठ कतार वाली पैडी ड्रम सीडर का आकलन	कृषि मशीनीकरण	4	4
6.	मछली	नर्सरी तालाबों में Fairy Shrimp (branchinella sp) निवारण का आंकलन	DDVP@375 मि.लि./हें का प्रयोग	4	5
7.	मछली	ग्रामीण तालाबों में मछली उत्पादन हेतु केचवा खाद के प्रयोग का आंकलन	प्राकृतिक भोजन की खाद द्वारा उपलब्धता (3-5 टन/हे/वर्ष)	4	4
8.	पी.आर.ए.	अंगीकृत ग्राम का पी.आर.ए.	-	-	-
9.	धान	धान में पैडी ड्रम सीडर द्वारा महिलाओं में कठिन परीश्रम की कमी का आंकलन	4 पैडी ड्रम सीडर	4	1

कृषकों के खेतों में प्रथम प्रदर्शन (एफ.एल.डी.)

क्र.	फसल	शीर्षक	कृषक संख्या	रकबा (एकड़)
1.	धान	धान की उन्नत किस्म की अनुसंसित उत्पादन विधि का प्रदर्शन	10	5
2.	सब्जियां	वर्षाकालीन सब्जियों में उठी हुई क्यारियों के महत्व का प्रदर्शन	4	2
3.	धान	धान में अंबिका पैडी वीडर द्वारा महिलाओं में कठिन परीश्रम की कमी का प्रदर्शन	4	1
4.	मछली	मौसमी तालाबों में मत्स्य बीज उत्पादन	5	6

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	संख्या	प्रशिक्षणार्थी
1.	कृषि अधिकारियों के लिये प्रशिक्षण	2	34
2.	महिला कृषकों कि लिये प्रशिक्षण	2	37
3.	कृषकों कि लिये प्रशिक्षण	3	43

मौसमी पोखर में मछलीबीज उत्पादन स्वयं करें

डॉ.सौगात सासमल, डॉ.श्रीमती रेखा सिंह, डॉ. एस.के.वर्मा, श्री एस.एम.अली हुमायूँ

छत्तीसगढ़ की जलवायु एवं औसत वर्षा का अनुपात मछली पालन के लिये उपयुक्त है। प्रदेश के ग्रामों में निस्तार तालाब बहुत से हैं, इनमें निस्तार के साथ-साथ मछलीपालन भी प्रमुखता से किया जाता है। इनमें बहुत से मौसमी हैं, इन तालाबों/पोखरों को मछली पालन में अभी सामान्यत: प्रयोग नहीं किया जा रहा है। ऐसे पोखरों में मत्स्य बीज संवर्धन वर्षा ऋतु में किया जा सकता है। मौसमी पोखर तैयार करते समय पोखर के पाल की आवश्यकतानुसार मरम्मत करना चाहिये जिससे जलस्तर बना रह सके। पानी के आगम-निर्गम द्वार पर सुव्यवस्थित रूप से बारीक जाली भी लगाना चाहिये जिससे अनावश्यक मत्स्य बीज का आगमन एवं संबंधित मत्स्य बीज का निर्गमन रोका जा सके। पोखर की पाल मरम्मत पश्चात् पोखर की तली का जोतकर मिट्टी ऊपर-नीचे करना चाहिये एवं 50 किलो प्रति आधा एकड़ की दर से बिना बुझा चूना (कली का चूना) का छिड़काव करते हैं। चूना रोगाणुनाशक का कार्य करता है जिससे मिट्टीमें उपस्थित कीटाणु एवं रोगाणु नष्ट हो जाते हैं, साथ ही यह तालाब की ऊर्वरीकरण क्षमता में वृद्धि भी करता है। पोखर को रोगाणुविहीन करने के लिये महुआ खली का प्रयोग करते है। ऐसे पोखर में 500 किलोग्राम महुआ खली पोखर में कुछ पानी होने पर डालना चाहिये। महुआ खली के उपयोग के पश्चात् प्रारंभ में कार्बनिक खाद के रूप में गोबर की कम आवश्यकता होती है क्योकि खली से ही पोखर में मछलियों का प्राकृतिक भोजन जन्तु एवं वनस्पति प्लवक पैदा हो जाते है। इस अवस्था में एक हजार किलोग्राम गोबर डालते है। महुआ खली उपलब्ध नहीं होती है तो पोखर में 2 हजार किलोग्राम (2 टन) गोबर पोखर के चारों किनारों पर ढेर बनाकर रखने से पानी का पर्याप्त उर्वरीकरण होता है। तैयार पोखर में पानी भरने पर तरह-तरह के अवांछित कीड़े उत्पन्न हो जाते है। इन कीड़ों में नोटोनेक्टा जलीय बिच्छु, स्टीक कीड़ा, बग, मेढ़क के बच्चे आदि नुकसानदायक है। कीड़ों के नाश हेतु पोखर में पानी की सतह पर शांत वातावरण में (जब हवा न चल रही हो) 5 लीटर डीजल एवं 1 किलोग्राम साबुन का घोल बनाकर भी छिड़काव करना चाहिये। मत्स्य बीज संचय के एक दिवस पूर्व मच्छरदानी जाल (नर्सरी जाल) चलाकर कीट-पतंगे, मेढक के बच्चे आदि निकाल लेते है।

तैयार किये गये पोखर में मछली के प्रारंभिक अवस्था के बच्चे स्पान का संचय करते है। 0.2 एकड़ में 10 लाख स्पान संचय करते हैं। सामान्यत: कतला 60%, रोहू 20% एवं मृगल 20% जीरा संचय करना उचित होता है, क्योंकि कतला के बच्चे की मांग अधिक होती है। पोखर में मछलीबीज संचय करने पर स्पान पोखर में उपलब्ध प्राकृतिक आहार (प्लवक या प्लेक्टॉन) का उपभोग करता है। अत: प्लेक्टॉन का निरंतर उत्पादन अत्यन्त लाभदायक होता है एवं बीज की उत्तरजीविका के लिये उपयुक्त होता है। पोखर मे उपलब्ध प्लवक बीज द्वारा 4-5 दिवस में उपयोग कर लिया जाता है। परिपूरक आहार के लिये सरसों या मूंगफली की खली एवं चावल के कोढ़े को समान मात्रा में पीसकर तैयार मिश्रण देते है।

उपरोक्त स्पान का संवर्धन करने पर 15 दिवस में 50.80 प्रतिशत उत्तरजीविका (प्रांरभिक संचय से प्राप्त बीज) एवं 25-30 मिलीमीटर तक लंबाई के फ्राई प्राप्त हो जाती है। फ्राई का निष्कासन पोखर से ठण्डे वातावरण में करना चाहिये। निष्कासन के एक दिवस पूर्व उसे पूरक भोजन नहीं देते है। साथ ही निष्कासन के पूर्व लगभग 6 घंटे के लिय बच्चे को निकालकर मलमल के कपड़े में रखना उचित होता है, जिससे परिवहन में उनकी मृत्यु नहीं हो पाती है एवं पानी भी गंदा नहीं हो पाता है।

इस प्रकार पोखर से बरसात के समय 2 से 3 बार मछली बीज की संचयन आसानी से किया जा सकता है। पहली बार मछली बीज की निकासी करने के उपरांत गोबर 200 किलो पोखर में डालकर पानी में अच्छी तरह मिलाकर 2-3 दिन पश्चात् पुन: संचय कर सकते है।